International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-01-2021; Accepted: 05-02-2021; Published: 02-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 01-04

अरुणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोककथाओं का अध्ययन: एक आवश्यकता

तेली मोमू
शोध छात्र, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स, ईतनगर, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में निशी जनजाति का नाम प्रमुख रूप से हमारे सामने आता है। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति जनजातीय समाज से तालूक रखता है। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोकसाहित्य मौखिक रूप से मौजूद है। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोककथाएँ लोगों की मानसिकता के साथ ही प्रकट हुई हैं जो निशी जनजाति की संस्कृति से जुड़ी हुई हैं। इनकी लोकसाहित्य की संरक्षणा के लिए उनकी लोकसाहित्य को लिपिबद्ध करना अति आवशयक है और उसके लिए निशी जनजाति की लोकसाहित्य की एक अंश लोककथा पर अध्ययन करना अति आवश्यक है। आज बढ़ते आधुनिकीकरण से युवा वर्ग अपनी परम्पराएँ, रीति-रिवाज, पूर्वजों के सांस्कृतिक धरोहर, विश्वासों, आदि को भूल रहे हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा में अधिक से अधिक निशी लोककथाओं की अमूल्य विरासत का संकलन करके उसे कुरक्षित रखा जाए। इस बात से भी डर लगता है कि कही बढ़ती आधुनिकीकरण निशी लोकसाहित्य के प्रमुख भाग निशी लोककथाओं के लुप्त होने का कारण न बन जाए। अत: अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोकजीवन को समझने, जानने और उसकी संरक्षा के लिए निशी जनजाति की लोकसाहित्य के प्रमुख भाग निशी लोककथाओं पर शोधपरक कार्य करना अति आवश्यक है।

मूलशब्द: निशी, जनजाति, लोककथा, अध्ययन, आवश्यकता

प्रस्तावना

अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में निशी जनजाति का नाम प्रमुख रूप से हमारे सामने आता है। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति जनजातीय समाज से तालूक रखता है। यह मुख्यत: राज्य के पापुम पारे, ईस्ट कामेंग, लोअर सुबनसिरी और कुरुंग कुमे जिलों में रहती हैं। जनसंख्या के आधार पर निशी जनजाति इस राज्य की सर्वाधिक जनजाति मानी जाती है। निशी जनजाति के लोग मंगोलियन नस्ल के माने जाते हैं। अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोकसाहित्य मौखिक रूप से मौजूद है। इसका यही कारण है कि इनकी अपनी लिपि नहीं हैं। इनकी अपनी लिखित साहित्य नहीं है। बदलते समय के साथ निशी जनजाति की लोसाहित्य का लिखित रूप लोकसाहित्य के क्षेत्र विकसित हो रही है। कुछ हद तक इसका श्रेय हिन्दी साहित्य को जाता है। क्योंकि अरूणाचल जैसे पिछड़े राज्य में हिन्दी का विकासशील रूप २१वी सदी में हुआ है। इस से पहले अरूणाचल प्रदेश में हिन्दी साहित्य से संबंधित कार्य बहुत कम देखने को मिलता था। इसके चलते स्थानीय लोकसाहित्य पर आधारित शोधपरक कार्य बहुत कम हुआ है। निशी लोकसाहित्य के प्रमुख अंग निशी लोककथा जनजातीय लोकसाहित्य का एक

महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका अध्ययन करना अति आवश्यक है।

अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोककथाएँ लोगों की मानसिकता के साथ ही प्रकट हुई हैं जो निशी जनजाति की संस्कृति से जुड़ी हुई हैं। निशी लोककथाओं में निशी समाज की मान्यताएँ, विश्वास, परम्परा, आदि निहित हैं। इनकी लोककथाएँ मौखिक परम्परा पर आधारित है और निशी जनजाति की लोकजीवन के सभी पहलूओं का सजीव चित्रण इनकी लोककथाओं में मिलती है। अधिकांशतः निशी लोककथाएँ वन एवं वन्य-प्राणियों से संबंधित है। निशी लोक-कथाओं में प्रकृति, परियों, भूत-प्रेत, अलौकिक पत्थर, जंगली जानवर, मनुष्य, आदि से संबंधित कथाएँ प्रचलित हैं, जैसे 'आबोतानी और बन्दर', 'चूकु तोपु', 'निमा और निया', 'तोगुम और तारिया', 'याचुम याचे', 'आब लोमा', ताई बिदा और मिथुन', आदि। इन कथाओं में मनुष्य, जानवर, पक्षी, सभी को परस्पर बातचीत करते हुए दिखाया गया है। इन कथाओं का कही न कही समाज की मान्यताओं, विश्वासों, परम्पराओं, आदि से जुड़ा हुआ है। निशी लोक-कथाओं के अन्तर्गत वे तत्व समाहित हुए हैं जिसमें समाज की मान्यताएँ एवं विश्वास परिलक्षित होती है। निशी लोककथाओं के अन्तर्गत वे कथाएँ सम्मिलित होती है जो हमारे पूर्वज कहानी के माध्यम से हमें सुनाते आये हैं तथा सुनाते हैं। निशी लोककथाओं में कई प्रकार की लोककथाएँ प्रचलित हैं जैसे प्रेम कथा, धर्म कथा, मनोरंजन कथा, पौराणिक कथा, अर्थ कथा, उपदेश कथा, आदि।

उदाहरण के तौर पर निशी जनजाति की लोककथा का एक अंश दृष्ट्व्य है जो मेरी अपनी मौलिक संकलन (श्रोत/कथाकार- श्री तेची बिदा, सगाली, अ. प्र.) है। इस लोककथा का नाम है 'होकुम और पिरिक बिर्म' (बाज और जंगली मुर्गी)। यह लोककथा निशी समुदाय की लोकमान्य एवं लोकविश्वास को अभिव्यक्त करता है। अतः किसी भी समुदाय या जन की संस्कृति को समझने व जानने के लिए उनकी लोकसाहित्य को समझना अति आवश्यक है। कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है- एक दिन 'होकुम' नामक पक्षी 'पिरिक बिर्म' को देखकर उनपर दिल आ गया और 'होकुम ने 'पिरिक बिर्म' को शादी का प्रस्ताव भेजा। होकुम के इस प्रस्ताव को पिरिक बिर्म ने ठुकरा दिया और पिरिक बिर्म के साथी अर्थात अन्य पक्षी भी शादी के पक्ष में नहीं थे। पिरिक बिर्म तथा अन्य पक्षियों के इस प्रतिक्रिया को देख होकुम को गुस्सा आया और उन लोगों पर युद्ध छेड़ने का फैसला किया। उन्होंने युद्ध के लिए पिरिक बिर्म और उनके साथियों को चुनौती दी और अन्य पक्षियों ने भी होकुम द्वारा दिए गए चुनौती को स्वीकार कर लिया। योजना के अनुसार अन्य पक्षियों ने अपनी तैयारियाँ शुरु कर दी। इसके लिए 'पुदुर' नामक पक्षी जो 'गेलि न्युब' (जो पुजारी के रूप में कार्यरत थे) उन्होंने हर एक पक्षी को उपयुक्त हथियार के साथ साथ अपने-अपने जिम्मेदारी सौंफ दी। गेलि न्युब ने 'पगा' (धनेश पक्षी) को एक कुल्हाड़ी दी। उसके बाद 'पोकोराता' (पक्षी का नाम) को एक बड़ा सा दाव म्यान के साथ सौंफ दी। इस प्रकार, हर एक पक्षी पुदुर (पुजारी) को हथियार के साथ अलग अलग जिम्मेदारियाँ सौंफ दी। किन्तु, 'ओचु ओहाम' नामक चिड़ियाँ को कुछ भी जिम्मेदारी नहीं दी क्योंकि वे मदिरा के कचरे को खा कर आँख लाल होकर अर्थात नशा होकर बैठा हुआ था। सभी लोग उसको यह कहकर तिरस्कार किया कि "वे कुछ भी हमारे मदद नहीं कर पायेंगे।" युद्ध के लिए दोनों दलों के बीच समय एवं स्थान का निर्धारण किया। दोनों दलों के तय के अनुसार युद्ध आरंभ हुआ और दोनों दल एक दूसरे पर हमला बोल रहे थे। इसी बीच होकुम 'पुदुर' को उठाके जा रहा था और सभी पक्षी होकुम पर अपने-अपने हथियार से वार करके पुदुर को चुराने की कोशीश की पर उसे होकुम के पंजे से चुरा नहीं पाया। सभी पक्षी लाचार और बेबस हो गये। इसी बीच ओचु ओहाम जो नशा होकर बैठा हुआ था उसने होकुम का पीछा किया और पुदुर को होकुम के पंजे से चुराने में कामयाब हो गये। ओचु ओहाम के इस बहादुर कार्य को देख सभी पक्षी हैरान हो गये और उनकी तारीफ करने लेगे। ओचु ओहाम के बदोलत अन्तः अन्य

पक्षियाँ युद्ध के मैदान में होकुम को पराजित किया और 'पिरिक बिर्म' को बाज के चुंगल से बचा लिया।

उपर्युक्त लोककथा को अध्ययन के पश्चात अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की सांस्कृतिक मान्यताएँ एवं विश्वास परिलक्षित होती हैं, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जो इस प्रकार है-

1. निशी लोग यह मानते हैं कि 'होकुम' अर्थात बाज सामान्य पक्षियों से अधिक घातक एवं खतरनाक होता है। सब पक्षी इनसे डरते हैं। ये छोटे पक्षियों को खा जाते हैं। निशी लोग इसे राक्षस या दानव का प्रतीक मानते हैं' अर्थात इस लोककथा में शत्रू के विरुद्ध सत्य की जीत है।
2. निशी समुदाय के लोग यह मानते हैं कि समाज में नारी प्रेम एवं सम्मान का प्रतीक है और यही इनकी इज्जत भी है। इज्जत की रक्षा करना निशी जन का परम कर्तव्य माना जाता है।
3. निशी जन यह मानते हैं कि युद्ध के खुली चुनौती देना युद्ध की परम्परा है।
4. यह एक नीतिपरक लोककथा भी है। किसी भी व्यक्ति की जाँच बाह्य रुप के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। 'ओचू ओहाम' नामक पक्षी ने अपने बल पर 'पिरिक बिर्म याचे' को होकुम बो जामजा के चुंगल से बचाया है जो एक जिम्मेदारी रक्षक का प्रतीक है।
5. धनेश पक्षी को कुल्हाड़ी देने के कारण उनके दिमाग नहीं होते।
6. 'पोकोराता' नामक पक्षी के शरीर में आंशिक बनावट दिखता है।
7. ओचु ओहाम मदिरा के कचरे को खाने के कारण उनके आँखें लाल दिखती है। बाज पक्षी को जंगल के हर पक्षी डरते हैं पर ओचु ओहाम से बाज नहीं डरते हैं।
8. 'पुदुर' नामक पक्षी के सर लालरूपी ताज की तरह बनावट होती है जो पुजारी की निशानी है।
9. पक्षियों के लिए स्थानीय नाम दिया गया हैं जैसे- पोकोराता, पुदुर, होकुम, ओचु ओहाम इत्यादि।
10. 'गलि न्युब; शब्द स्थानीय पुजारी के लिए प्रयोग में लाया गया हैं जो जनसमुदाय के बीच मध्यस्त का काम करता है।

किसी भी समुदाय की संस्कृति को जानने व समझने के लिए अनकी लोकसाहित्य को समझना अति आवश्यक है और उसके लिए शोधकार्य करना जरूरी है। जनजातीय समाज के लोग कम पढ़े-लिखे होते हैं इसका कारण यह होता है कि उसमें बुनियादी सुविधाओं की कमी होती है। चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र हो, यातायात की सुविधा हो, व्यावसायिक सुविधा हो, इत्यादी। इसी प्रकार अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति भी जनजाती समाज से तालुक रखते हैं जिनकी लोकसाहित्य अभी तक मौखिक रूप में ही मौजूद है। इनकी लोकसाहित्य की संरक्षणा के लिए उनकी लोकसाहित्य को लिपिबद्ध करना अति आवशयक है और उसके लिए निशी जनजाति की लोकसाहित्य की एक अंश लोककथा पर अध्ययन करना अति आवश्यक है। मेरी जानकारी के अनुसार, निशी लोकसाहित्य के बारे में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा गया है, परन्तु अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी में बहुत ही कम लिखा गया है और निशी लोककथाओं का शोधपरक कार्य आज तक किसी ने नहीं किया है। निशी लोक-कथाओं के संकलन की आवश्यकता के संबंध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आधुनिकता और विघटनकारी कारणों की वजह से कही निशी लोकसाहित्य का महत्वपूर्ण भाग निशी लोककथा, कही खतरे में न पड़ जाए। इसके अलावा इन लोककथाओं का लिपिबद्ध न होकर लोक में मौखिक रूप में होना इस डर को और भी बढ़ा देते है। आज बढ़ते आधुनिकीकरण से युवा वर्ग अपनी परम्पराएँ, रीति-रिवाज, पूर्वजों के सांस्कृतिक धरोहर, विश्वासों, आदि को भूल रहे हैं। लोककथाओं की मौलिकता अब ग्राम्य अंचलों में भी नष्ट होने जा रही है। उनमें लोकजीवन के तत्वों का अभाव तथा आधुनिकता का समावेश निरंतर बढ़ता जा रहा हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा में अधिक से अधिक निशी लोककथाओं की अमूल्य विरासत का संकलन करके उसे कुरक्षित रखा जाए। इस

बात से भी डर लगता है कि कही बढ़ती आधुनिकीकरण निशी लोकसाहित्य के प्रमुख भाग निशी लोककथाओं के लुप्त होने का कारण न बन जाए। आज समाज के पुरुष, महिलाएँ तथा बच्चे सभी पाश्चात्य जीवनशैली को अपना रहे हैं। यह हमारे लोकसाहित्य के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। आज हर कोई ईंट से बनी मकान में रहना चाहते हैं। यह नहीं सोचते कि हमारे पूर्वजों ने हमें मकान बनाना कभी सिखाया भी होगा। तकनीकी युग के कारण इस समाज के लोग अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। एक बेहतर मानव बनने के लिए हर किसी को अपने संस्कृति को बनाए रखना जरुरी है और संस्कृति को बनाए रखने के लिए लोकसाहित्य पर ध्यान देना बहुत जरुरी है। आज निशी समुदाय के लोग अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं और इसका एक कारण भाषिक संरचना भी है। बढ़ती आधुनिक जीवन शैली के कारण लोग अपनी मातृभाषा 'निशी' को भूल रहे हैं और युवा वर्ग हिन्दी या अंग्रेजी भाषा को ही अभिव्यक्ति का साधन बना रहे हैं। माँ अपने बच्चे से, भाई अपनी बहन से, चाचा-चाची, आदि हिन्दी या अंग्रेजी को ही मातृभाषा की भाँति प्रयोग कर रहे हैं जिससे अनजान ही अपनी मातृभाषा का विघटन कर रहे हैं। आनेवाला कल भाषा के क्षेत्र में इस समुदाय के लिए यह एक मुश्किल खड़ा कर सकता है। इन सब बातों को मद्देनजर रखते हुए यह कहा जा सकता है कि निशी लोक-कथा के माध्यम से आज के युवा वर्ग अपनी मातृभाषा सीख सकती है। लोक-कथा बुजुर्गों के द्वारा ही हासिल की जा सकती है और बुजुर्ग लोग स्थानीय बोली का प्रयोग करते हैं। ग्रामीण जनता द्वारा प्रयोग किए जानेवाले भाषा को लोक-कथाओं के लिए प्रयोग में लाया जाता है जैसे 'खाबनाम' (रोना), 'न्येम' (स्त्री), 'राकाप' (कछुआ), 'बुर' (मगरमच्छ), 'ऊई' (शैतान), 'पिन्च' (चमगादर), आदि। इन सब स्थानीय भाषाओं को लिपिबद्ध करने तथा संरक्षित रखने के लिए भी निशी लोककथाओं पर शोधकार्य करना अति आवश्यक है। भाषिक संरचना के अतिरिक्त संकलित लोक-कथाओं के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति का संबंध, मनुष्य और पशु-पक्षियों का संबंध, वन्य-प्राणियों का संबंध, लोक विश्वास, जैसे कई पहलूओं को लोग समझ पाएँगे। अत: अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति की लोकजीवन को समझने, जानने और उसकी संरक्षा के लिए निशी जनजाति की लोकसाहित्य के प्रमुख भाग निशी लोककथाओं पर शोधपरक कार्य करना अति आवश्यक है।

टिप्पणी

1. संदर्भित आलेख में बोलचाल भाषा का प्रयोग किया गया हैं क्योंकि अरूणाचल प्रदेश की निशी जनजाति जनजातीय समाज से तालुक रखते हैं जनजातीय लोकसाहित्य को समझने व जानने के लिए जनजातीय लोगों के बीच रहना आवश्यक है। जिसमें भाषा भी उसकी एक भाग है।
2. उद्दृत लोककथा मौलिक एवं अप्रकाशित लोककथा हैं।
3. पक्षियों के स्थानीय नाम का प्रयोग किया गया हैं, जैसे- होकुम, पुदुर, ओचु ओहाम, पोकोराता इत्यादि।

संदर्भ ग्रंथ

1. माता प्रसाद: मनोरम भूमि: अरूणाचल प्रदेश, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,प्रथम संस्करण १९९५
2. वीरेन्द्र परमार: अरूणाचल के आदिवासी और उनका लोकसाहित्य, अमसारी रोड दरियांगंज, दिल्ली, प्रथम सम्स्करण-२००९
3. डा. कृष्णदेव उपाध्याय: लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, द्वितीय संस्करण-२००८
4. डा. जोराम आनिया ताना: निशी लोकगीत: सांस्कृतिक अध्ययन, गौतम बुक सेंटर, प्रथम संस्करण-२००९
5. डा. जोराम यालाम: निशी जनजाति का समाजभाषिक अध्ययन, बिजयो भारती प्रकाशन, गुवाहाटी, प्रथम संस्करण-२०१०
6. तोब तारिन तारा: निशी वाल्र्ड, ईस्टर्न होरीजोन आफसेट प्रिण्टर पब्लिसर्स, ईटानगर, द्वितीय संस्करण-२००८